DSSSB PRT, TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR WITH ANKIT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

आधुनिक काल

Part -2

LIVE 25-06-2024 09:00 AM

बालमुकुन्द गुप्त

बालमुकुन्द गुप्त का जन्म गुड़ियानी गाँव, हरियाणा में हुआ। उन्होंने हिन्दी के निबन्धकार और सम्पादक के रूप में हिन्दी जगत की सेवा की।

भाषा साहित्य और राजनीति के सजग प्रहरी रहें। देशभक्ति की भावना इनमें सर्वोपरी थी। भाषा के प्रश्न पर महावीर प्रसाद द्विवेदी से इनकी नोंक-झोक, लार्ड की शासन नीति की व्यंग्यपूर्ण और चुटीली आलोचनायुक्त, शिवशम्भु के चिट्ठे और उर्दूवालों के हिन्दी विरोध के प्रत्युतर में 'उर्दू बीबी के नाम चिट्ठी' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। लेखनशैली सरल, व्यंग्यपूर्ण, मुहावरेदार और हृदयग्राही होती थी। पैनी राजनीतिक सूझ और पत्रकार की निर्भीकता तथा तेजस्विता इनमें कूट कूटकर भरी थी।

प्रमुख रचनाएँ

(i) हरिदास

(ii) खिलौना

(iii) खेलतमाशा

(iv) स्फुट कविता

(v) शिवशम्भु का चिट्ठा

(vi) सन्निपात चिकित्सा

द्विवेदी युग

आधुनिक कविता के दूसरे पड़ाव (1903-1916) को 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। डॉ. नगेन्द्र ने द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा है और इसकी समयावधि को वर्ष 1900 से 1918 ई तक माना।

वहीं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने द्विवेदी युग को 'नई धारा द्वितीय उत्थान' के अन्तर्गत रखा है तथा समयावधि सन् 1893 से 1918 तक मानी हैं।

1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक बने। सम्पादक बनने के बाद द्विवेदी जी ने हिन्दी भाषा के परिष्कार पर विशेष ध्यान दिया। भारतेन्दु-युग के कई लेखकों का उत्तर काल द्विवेदी - युग में समा जाता है।

मैथिलीशरण गुप्त और प्रेमचन्द का वैचारिक निर्देशन आचार्य द्विवेदी करते हैं, इसलिए अपेक्षाकृत उन रचनाकारों के होने पर भी युग- - निर्माता वे ही हैं।

द्विवेदी युगीन काव्य प्रवृत्तियाँ

द्विवेगी युगीन कवियों ने जनमानस के बीच राष्ट्रप्रेम की लहर चलाई। स्वतन्त्रता के प्रति जनमानस में चेतना का संचार किया। इस युग के रचनाकारों का राष्ट्रप्रेम भारतेन्दु-युग की भाँति सामयिक रूदन से नहीं जुड़ा है, बल्कि समस्याओं के कारणों पर विचार करने के साथ-साथ उनके लिए समाधान ढूँढने तक जुड़ा हैं।

हम क्या थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी ।
आओ मिलकर विचारें ये समस्याएँ सभी । "

यह युग सुधारवादी युग भी कहलाता है। इस युग के कवियों ने सामाजिक समस्याओं जैसे - दहेज प्रथा, नारी उत्पीड़न, छुआछूत, बाल विवाह आदि को अपनी कविता का विषय बनाया । 'प्रतापनारायाण मिश्र' नारी के वैधव्य जीवन और बाल विधवाओं की तरुण अवस्थाओं को देखकर रो पड़ते हैं।

"कौन करेजा नहीं कसकत, सुनी विपत्ति बाल विधवन की । "

द्विवेदीयुगीन काव्य आदर्शवादी एवं नीतिपरक है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी नैतिकता एवं आदर्श के प्रबल पक्षधर थे। रीतिकालीन शृंगारिकता यहाँ दिखाई नहीं पड़ती।

आदर्शवाद तथा बौद्धिकता की प्रधानता के कारण द्विवेदी युग के कवियों ने वर्णन प्रधान इतिवृत्तात्मकता को अपनाया ।

इतिवृत्तात्मकता के कारण इस युग में इतिवृत कथा पर अधिक बल दिया जाने लगा और प्रबन्धात्मक रचनाएँ अधिक लिखी जाने लगी। मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ – 'साकेत', 'जयद्रथ', पंचवटी' 'यशोधरा' आदि प्रबन्ध काव्य हैं।

द्विवेदी युग में लगभग सभी काव्य रुपों का प्रयोग हुआ। मुक्तक प्रगति प्रभृति सभी काव्यों रूपों में रचना हुई। हिन्दी के अनेक श्रेष्ठ खण्डकाव्य इसी युग में लिखे गए। द्विवेदी युग में सभी कवि मुक्तक रचना की ओर प्रवृत्त हुए। छोटे-छोटे विषयों को लेकर स्वतन्त्र पद्यों की रचना हुई ।

द्विवेदी युग के कवि

इस युग के प्रमुख के कवि निम्न हैं-

श्रीधर पाठक (1859-1928)

श्रीपाठक प्राकृतिक सौन्दर्य, स्वदेश प्रेम तथा समाजसुधार की भावनाओं के हिन्दी कवि थे। वे प्रकृति प्रेमी, सरल, उदार, नम्र, सहृदय, स्वच्छन्द तथा विनोदी थे।

पाठक जी मौलिक उद्भावनाओं के कवि हैं। विषय और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से आधुनिक हिन्दी काव्य को एक नया मोड़ देने के कारण उन्हें स्वच्छन्द भावधारा का प्रवर्तक ठहराया गया।

इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में रचनाएँ की लेकिन समर्थक वे खड़ी बोली के ही थे। श्रीधर पाठक हिन्दी खड़ी बोली के प्रथम कवि माने जाते हैं।

प्रमुख रचनाएँ

श्रीधर पाठक जी

मनोविनोद, धन विनय, गुनवन्त हेमन्त, वनाष्टक, गोखले गुनाष्टक, जगत सचाई सार, एकान्तवासी योगी, काश्मीर सुषमा, आराध्य शोकांजलि, जार्ज वन्दना, भक्ति विभा, श्रीगोपिकागीत, भारतगीत, श्रान्त पथिक, ऊजड़ग्राम |

श्रीधर पाठक की 'काश्मीर सुषमा' में प्रकृति की कल्पना नारी के रूप में कर उसे सजीवता प्रदान की गई है।

श्रीधर पाठक ने 'गोल्ड स्मिथ' के तीन काव्य ग्रन्थों हरमिट का अनुवाद 'एकान्तवासी योगी', ट्रेवलर का अनुवाद, श्रान्त पथिक' और 'डिजर्टेड विलेज' का अनुवाद ऊजड़ग्राम' नाम से किया है।

'एकान्तवासी योगी' और 'श्रान्त पथिक' खड़ी बोली में तथा 'ऊजड़ग्राम' ब्रजभाषा में हैं।

नाथूराम शर्मा 'शंकर' (1859-1932)

इनका जन्म 'हंरदुआगंज अलीगढ़' में हुआ था। ये हिन्दी, उर्दू, फारसी तथा संस्कृत भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे।

मुख्य रचनाएँ

'अनुराग रत्न' 'शंकर सरोज', गर्भरण्डा - रहस्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान साहित्यकार पत्रकार एवं युगप्रवर्तक थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के पहले लेखक थे, जिन्होंने केवल अपनी जातीय परम्परा का गहन अध्ययन ही नहीं किया था, बल्कि उसे आलोचकीय दृष्टि से भी देखा था। आचार्य द्विवेदी मूलतः व्यवस्थापक हैं, जो उस समय नए-नए बनते खड़ी बोली हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास की ऐतिहासिक आवश्यकता थी। उनकी तुलना 18वीं शती के अंग्रेजी लेखक डॉ. जॉन्सन से किसी रूप में हो सकती है जिनकी अपनी रचनात्मक क्षमता बहुत बड़ी न थी, पर जिनके बहुआयमी व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की प्रतिभा थी।

दोनों कवि हैं, अधिकतर इतिवृत्तपरक, गहरे भाषाविद् और सम्पादक हैं। अनेक कवियों और लेखकों के गुरु-मित्र तथा प्रेरक हैं तथा सबसे बड़ी बात यह है कि आदि से अन्त तक निर्भीक है, पूरी शिष्टता के साथ। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नायिका भेद को छोड़कर विविध विषयों पर कविता लिखने, सभी प्रकार के छन्दों का व्यवहार करने, सभी काव्यरूपों को अपनाने तथा गद्य और पद्य भाषा के एकीकरण का परामर्श दिया।

मौलिक पद्य रचनाएँ देवी स्तुति – शतक (1892), कान्यकुब्जा वलीव्रतम (1898), समाचार पत्र सम्पादन स्तव: (1898), नागरी (1900), काव्य मंजूषा (1903), कान्यकुब्ज - अबला - विलाप (1907), कविता विलाप (1909), सुमन (1923), द्विवेदी काव्य माला (1940)

अनूदित पद्य

विनय विनोद (1889) — भर्तृहरि के 'वैराग्यशतक' के दोहों में अनुवाद।

विहार वाटिका (1890) - गीत - गोविन्द का भावानुवाद

स्नेहमाला (1890) — भर्तृहरि के 'शृंगार शतक' का दोहों में अनुवाद|

गंगा लहरी (1891) – पण्डितराज जगन्नाथ की 'गंगालहरी' का सवैयों में अनुवाद|

ऋतुतरंगिणी (1891) — कालिदास के ऋतुसंहार का छायानुवाद|

कुमारसम्भव सार (1902) - कालिदास के 'कुमारसम्भवम्' के प्रथम पाँच सर्गों का सारांश|

मौलिक गद्य रचनाएँ : नैषध चरित्र चर्चा, वैज्ञानिक कोश, : नाट्यशास्त्र, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, सम्पत्ति शास्त्र,

कौटिल्य कुठार, कालिदास की निरंकुशता, वनिता विलाप, रसज्ञ रंजन, सुकवि संकीर्तन, अतीत स्मृति, साहित्य सन्दर्भ, अद्भुत आलाप, महिलामोद, आध्यात्मिकी, वैचित्र्य चित्रण, साहित्यालाप, विज्ञ विनोद, कोविद कीर्तन, विदेशी विद्वान, प्राचीन चिह्न, चरित चर्या, पुरावृत, दृश्य दर्शन, चरित्र चित्रण, साहित्य सीकर, विज्ञान वार्ता, वाग्विलास, संकलन, विचार-विमर्श, आत्म निवेदन, प्रभात, कवि और कविता।

अनूदित गद्य : भामिनी - विलास, अमृत लहरी |

जगन्नाथदास रत्नाकर

रत्नाकर जी का ब्रजभाषा पर अपूर्व अधिकार था और उनकी प्रसिद्ध ब्रजभाषा रचनाओं में सुन्दर ठेठ शब्दावली का व्यवहार हुआ है। रत्नाकार जी स्वच्छ कल्पना के कवि हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत दृश्यावली सदैव अनुभूति सनी हैं और संवेदना को जाग्रत करने वाली है। रत्नाकार जी के काव्य का वर्ण्य विषय भक्ति काल के अनुरूप भक्ति, शृंगार, भ्रमर गीत आदि से सम्बन्धित है । उनके विषय में यह सत्य ही कहा गया है कि रत्नाकार जी ने भक्तिकाल की आत्मा रीतिकाल के ढाँचे में अवतरित की है।

रचनाएँ : इनकी रचनाएँ पद्य शैली में जो इस प्रकार हैं

हरिश्चन्द्र (खण्डकाव्य)

उद्धव शतक (प्रबन्ध काव्य)

कलकाशी (मुक्तक)

श्रृंगार लहरी (मुक्तक)

विष्णु लहरी (मुक्तक)

वीराष्टक (मुक्तक)

गंगावतरण (पुराख्यान काव्य) 1923

हिण्डोला (मुक्तक)

समालोचनादर्श (पद्य निबन्ध)

गंगा लहरी (मुक्तक)

रत्नाष्टक (मुक्तक)

प्रकीर्णक पद्यावली (मुक्तक संग्रह)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

हरिऔंध जी ने विविध विषयों पर काव्य रचना की है। यह उनकी विशेषता है कि उन्होंने कृष्ण-राधा, राम-सीता से सम्बन्धित विषयों के साथ-साथ आधुनिक समस्याओं को भी लिया है। हरिऔंध जी ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही कविता की है, अधिकांश रचनाएँ खड़ी बोली में ही हैं।

रचनाएँ

- प्रियप्रवास (1914)
- पारिजात (1937)
- चुभते चौपदे (1932)
- रस कलश (1940)
- ठेठ हिन्दी का ठाठ
- अध खिला फूल

- चौखे चौपदे (1924)
- कवि सम्राट
- वैदेही वनवास (1940)
- पद्य प्रसन
- रुक्मिणी परिणय
- हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास

रचनाओं से सम्बन्धित अन्य तथ्य

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की प्रथम रचना कृष्ण शतक ब्रजभाषा में लिखी गई।

हरिऔध जी का ब्रजभाषा में दूसरा प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रसकलश' हैं। यह रस का विस्तृत विवेचन करने वाला रीति ग्रन्थ है।

'रसकलश' में युग की बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार, नायिका भेद के अन्तर्गत हरिऔध जी ने नवीन ढंग की नायिकाओं – देश प्रेमिका, लोक प्रेमिका, जाति प्रेमिका परिवार - प्रेमिका की कल्पना की है।

हरिऔध कृत 'प्रियप्रवास' हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। यह सत्रह सर्गों में विभक्त है। इसमें शृंगार और करुण रस की प्रधानता है। प्रियप्रवास' संस्कृत के वर्णवृत्तों में रचित तथा इसमें सात छन्दों मालिनी, मन्दाक्रान्ता, वैशस्थ, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, शार्दुल विक्रीड़ित और शिखरिणी का प्रयोग हुआ हैं।

वैदेहीवनवास हरिऔध का दूसरा प्रबन्ध काव्य है, जिसमें सीता परित्याग की कथा वर्णित है।